एक अधूरा सपना

(पुस्तक के कुछ अंश)

ट्रिन-ट्रिन,ट्रिन-ट्रिन,ट्रिन-ट्रिन

फोन की घंटी बज रही थी शाम का वक्त था ,

आकाश ने फ़ोन पर देखा अननोन नंबर

फोन उठाया हैलो ,

सामने से तेज सांसों की आवाज आ रही थी ...

फिर खामोसी टूटी और आवाज आई - 'आकाश ..'

ये शब्द जैसे आकाश के कानों में गूंज उठा सालो बाद वही आवाज वही खामोसी ... दूसरी तरफ रश्मि थी...

आकाश कही खो गया , अतीत के पन्ने नजरो के सामने खुलते गए । आगे............

ट्रिन-ट्रिन,ट्रिन-ट्रिन,ट्रिन-ट्रिन

फोन की घंटी बज रही थी शाम का वक्त था ,

आकाश ने फ़ोन पर देखा अननोन नंबर

फोन उठाया हैलो ,

सामने से तेज सांसों की आवाज आ रही थी ...

फिर खामोसी टूटी और आवाज आई - 'आकाश ..'

ये शब्द जैसे आकाश के कानों में गूंज उठा सालो बाद वही आवाज वही खामोसी ... दूसरी तरफ रश्मि थी...

आकाश कही खो गया , अतीत के पन्ने नजरो के सामने खुलते गए ।

आकाश बचपन से ही बड़ा होनहार छात्र था , गरीब होने के बावजूद उसके पिताजी ने उसे पढ़ाने में कोई कमी नही की ।

आकाश भी बचपन से ही आत्मनिर्भर था या कहे कि गरीबी ने उसे ऐसा बना दिया था , रोज सुबह 4 बजे उठकर पेपर बाटने जाना उसके बाद स्कूल और फिर खेत जाकर अपने पिताजी के हाथ बटाना यही उसका रोज का दिनचर्या था।

5वी कक्षा में उसने जिले में टॉप किया और आगे पढ़ने के लिए उसे स्कॉलरशिप मिल गयी।

स्कूल में एक मास्टरजी थे शर्मा जी जो गणित की क्लास लिया करते थे ।

शर्मा जी आकाश को बहुत पसंद करते थे क्योंकि उन्होंने बचपन से आकाश के मेहनत और संघर्ष को देखा था।

एक दिन कक्षा में मास्टर जी ने ब्लैक बोर्ड पर लिखा

मेरा सपना - जीवन का उद्देश्य

इस विषय पर कल सब तैयारी कर के आएँगे सब को कुछ बोलना है।

आकाश कुछ सोचने लगा,

कुछ साल पहले उसने देखा था एक साहब आये थे गांव में, सूट बूट पहन कर गांव का दौरा करने, सब लोग उनको प्रणाम कर रहे थे तो कोई पैर छू रहा था।

वो साहब सब गांव वालों की परेशानियां सुन रहे थे और सबका हल निकालने के लिए अपने साथ आये बाकी अधिकारीयो को आदेश दे रहे थे। किसी के खेतों में पानी नही आ रहा या कही सड़क बनवानी हो या फिर स्कूल में शिक्षक नही हो।

आकाश को ये सब देख कर बहुत अच्छा लग रहा था उसने अपने पिताजी से पूछा

बाबा वो कौन है

पिताजी ने कहा - बेटा ये बहुत बड़े साहब है ये हमलोगों की परेशानियां दूर करने आये है ये कलेक्टर साहब है ।

बाबा मैं भी बड़ा होकर कलेक्टर बनूँगा, आकाश ने मुस्कुराते हुए कहा

पिताजी ने भी मुस्कुरा कर कहा हां बेटा तू बहुत मेहनत करना और कलेक्टर बनना।

अगले दिन कक्षा में

तो बच्चो चलो बारी बारी से बताओ

किसी ने कहा मैं इंजीनियर बनूँगा, किसी ने डॉक्टर कहा

आकाश की बारी आयी

सररर.. मैं बड़ा होकर कले..कलेक कलेक्टर बनूँगा हकलाते हुए कहा

सारे बच्चे हँसने लगे ...मजाक उड़ाने लगे, मास्टरजी ने सबको डांट लगाई और शांत कराया।

कक्षा खत्म हुई सब बच्चे घर जाने लगे, तभी मास्टरजी ने कहा आकाश तुम रुको आज हम साथ मे घर चलते है आकाश का घर मास्टर जी के घर के रास्ते मे ही पड़ता था।

दोनो साथ में खाली सड़क में पैदल चलने लगे आकाश निराश था सर झुकाये हुए चल रहा था।

तभी मास्टर जी ने कहा - देखो बेटा आकाश निराश मत हो एक बात जिंदगी में हमेशा याद रखना ये जो तुम्हारा सपना है ना ये तुमसे कोई नही छीन सकता, बस तुम इस सपने को कभी खुद से दूर मत होने देना हमेशा इसे अपने दिल से लगाये रखना,

जिंदगी के सफर में तुम्हे बहुत सारे लोग मिलेंगे कुछ इस पर हसेंगे कुछ मजाक उड़ायेंगे पर तुम उन सब पर ध्यान मत देना तुम अपना पूरा ध्यान अपने सपने पर रखना और अपने इस सपने को कभी अपने आंखों से ओझल नही होने देना ।

आकाश का घर आ गया उसने मास्टर जी से विदाई ली और अंदर चला गया अब भी किसी सोच में डूबा हुआ ....

वक्त अपनी गति से चलता गया और आकाश भी आगे बढ़ता गया।

12वी में 80% अंको के साथ उतीर्ण होकर उसने गांव के पास के शहर के कॉलेज में एडमिशन ले लिया।

अपना गुज़ारा करने के लिए कॉलेज के साथ साथ बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना चालू कर दिया।

आज कॉलेज के पहले सेमेस्टर का रिजल्ट आया और आकाश ने अपना रिजल्ट देखा सबसे उपर उसी का नाम था फर्स्ट

कोंग्रेचुलेशन आकाश ! पीछे से एक मीठी सी आवाज आई ....

हड़बड़ाकर पीछे देखा तो रश्मि खड़ी थी एक प्यारी सी मुस्कान लिए हुए

यूँ तो रश्मि और आकाश एक ही क्लास में थे पर कभी दोनो की बात नही हुई थी बस कभी कभी नजरे मिल जाती थी एक दूसरे को देख कर बस मुस्करा लिया करते थे ।

रश्मि शांत स्वभाव की साधारण सी लड़की थी जो ज्यादातर अपने सहेलियों के साथ रहती थी ।

थैंक्स रश्मि, आकाश ने जवाब दिया

हमे कोंग्रेचुलेशन नही बोलोगे हम सेकंड आये है, रश्मि ने कहा

ओह मैने देखा नही कोंग्रेचुलेशन रश्मि

थैंक्स आकाश, रश्मि ने कहा

बस फिर क्या था अब दोस्ती का सिलसिला शुरू हो गया दोनो में अच्छी दोस्ती हो गई दोनो अक्सर लाइब्रेरी में साथ मे पढ़ाई किया करते थे।

आकाश अपनी हर बात अब रश्मि से शेयर करने लगा था पहली बार उसने किसी को अपने इतना करीब महसूस किया ।

रश्मि भी अब आकाश की जिंदगी से पूरी तरह वाकिफ थी जब भी कोई परेशानी आती वो हमेशा आकाश की हौसला अफजाई करती।

धीरे धीरे रश्मि आकाश को पसंद करने लगी थी और आकाश के मन मे भी रश्मि के लिए विचार आने लगे थे पर आकाश ने कभी रश्मि से इनका जिक्र नही किया और करता भी कैसे वो खुद इतने जिम्मेदारीयो के बोझ तले दबा हुआ था ।

पर कब तक खुदको रोक पाता रश्मि के प्यार ने उसे पिघला दिया और उसने अपने प्यार का इज़हार कर लिया ।

दोनो साथ जीने मरने की कसमें खाने लगे आकाश का अब बस एक ही सपना था वो अपनी पूरी ज़िंदगी अब रश्मि के साथ बिताना चाहता था ।

पर वक्त को शायद कुछ और ही मंजूर था।

मोबाइल की लाइट जल रही थी , देखा तो रश्मि का मैसेज था, आज शाम को नेहरू पार्क पर मिलना कुछ जरूरी बात करनी है।

शाम को आकाश पार्क में पहुच गया और उसी जगह इंतेज़ार करने लगा जहा रश्मि के साथ अक्सर बैठा करता था।

सोच रहा था क्या बात होगी जो रश्मि ने पार्क बुला लिया उसे तो हर बात बताने की बड़ी जल्दी रहती है फिर आज क्यों...

सोच ही रहा था तभी रश्मि को आते देखा और मुस्कराया जवाब में रश्मि ने भी मुस्कराने का नाटक किया

रश्मि पास आई और आकाश के बाजू में बैठ गयी उसका हाथ थामा और आँखों मे देखती रही, रश्मि की ये खामोसी ने जैसे आकाश के मन मे तूफान ला दिया उसने रश्मि को कभी इतना खामोश और गुमसुम नही देखा था

उसने रश्मि का हाथ जोर से थामा और पूछा बोलो रश्मि चुप क्यों हो , रश्मि की आखों में अश्रुधारा बहने लगे, आकाश ने आँसुओ को पोछते हुये कहा याद है मैंने तुमसे वादा किया था कि आज से तुम्हारे सारे आंसू मेरे और मेरी सारी खुशिया तुम्हारी ...

रश्मि ने सिसकते हुए कहा आकाश मैं तुम्हारे बिना नही जी सकती।

मेरे घरवालो ने मेरी शादी तय कर दी है, मैं ये शादी नही करना चाहती मुझे अपने साथ कही ले चलो आकाश मैं तुम्हारे बिना नही रह सकती।

आकाश हंस पड़ा, आंसू पोछते हुए बोला अरे पगली इसमे रोने की क्या जरूरत है पहले रोना बंद करो।

उसने रश्मि का सर अपने कंधे पर रखा, उसके हाथों को थामा और ढलती हुई शाम को देखते हुये कहा तुम मेरी जिंदगी में इस सूरज की तरह हो जो सुबह इस दुनिया को उजालो से भर देता है और जब जाता है तो चाँद को अपनी रोशनी देते हुए जाता है जो अंधेरी रातो का सहारा बनती है ।

एक अजीब सी खामोसी थी ....

रश्मि अब भी सिसक रही थी, शाम ढल रही थी सूरज अपनी लालिमा बिखेरता हुआ ओझल हो रहा था...

"न चाहत के अंदाज अलग ,

न दिल के जज्बात अलग

थी सारी बात लकीरों की

तेरे हाथ अलग, मेरे हाथ अलग।"

आकाश टूट चुका था, यू तो उसे पता था ये एक दिन होना है पर आज जब वो वक्त आया तो जैसे वो टूटकर बिखर गया।

रश्मि एक पारिवारिक लड़की थी और आकाश की इतनी हैसियत नही थी कि वो उस समय रश्मि को अपना सके। दोनो ने तय कर लिया कि उनका एक होना मुमकिन नही है ।

आकाश को अपनी गरीबी पर कभी इतना तरस नही आया जितना उस दिन आया , उसे जैसे नफरत हो गयी गरीबी से, इस समाज से और हर उस चीज़ से जिसने उससे रश्मि को छीन लिया

"मज़हब, दौलत, जात, घराना,

जाने कितने चूहों ने कुतरा मुहब्बत की चादर को।"

रश्मि के जाने के बाद जैसे आकाश की जिंदगी में एक तूफान सा आ गया वो शहर छोड़ कर चला गया

दूसरे शहर में जाकर उसने एक कोचिंग इंस्टीट्यूट जॉइन कर लिया और साथ साथ आगे मास्टर की पढ़ाई भी करने लगा।

उसने कुछ करने की ठान ली और जी जान से लग गया , किताबों से दोस्ती कर ली।

आकाश जानता था जिंदगी में सफल होने के लिए या तो किस्मत चाहिये या मेहनत

किस्मत होती तो वो गरीब न होता अब उसके पास एक ही रास्ता था मेहनत।

वक्त अपनी रप्तार से चलता गया आकाश ने भी मेहनत में कोई कसर नही छोड़ी।

आज उसका आईएएस का इंटरव्यू था वो बाहर बैठा अपने बारी की प्रतीक्षा कर रहा था , आसपास देखा तो तनाव का माहौल था कोई सूट में तो कोई टाई लगाकर आया था, कोई अंग्रेजी में कुछ बड़बड़ा रहा था।

वो बस अपनी बेंच पर बैठ कर अपने यहाँ तक के सफर के बारे में सोच रहा था अपनी सफेद शर्ट , काले पेंट और दोस्त से उधार मांगी टाई के साथ।

बारी आ गयी इंटरव्यू शुरू हो गया और शुरू हो गया सवालो और जवाबो का सिलसिला , आकाश ने अपना परिचय दिया और प्रश्नो के जवाब देता गया कुछ के सही जवाब दिए कुछ में बस थोड़ा बहुत ही बता पाया।

इसके बाद एक इंटरव्यूर ने एक आखिरी प्रश्न पूछा ।

आकाश आज अगर आपका सेलेक्शन नही होगा तो आप क्या करेंगे?

आकाश ने उत्तर दिया

सर मैं संघर्ष करूँगा, बचपन से सीखा है संघर्ष करना और जब तक जिंदा हूँ तब तक विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करता रहूंगा।

आकाश के चेहरे पर सन्तुष्टि थी।

आज का दिन (फ़ोन पर) .....

आकाश सुन रहे हो ना.. दूसरी ओर से आवाज आई

आकाश हड़बड़ाते हुए बोला हाँ रश्मि..

रश्मि ने आगे कहा

अखबार में नाम पढ़ा तुम्हारा , आज बहुत खुश है तुम्हारे लिए। सुबह से ढूंढ रहे हैं तब जाकर अभी बड़ी मुश्किल से मिला तुम्हारा नंबर। हमे पूरा यकीन था कि तुम एक दिन अपना सपना जरूर पूरा करोगे ।

रश्मि के सामने टेबल पर आज का न्यूज़ पेपर रखा था,

न्यूज़ पेपर पर हैडिंग था

शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए रामपुर कलेक्टर आकाश को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

आज हम बात करेंगे रामपुर के कलेक्टर आकाश की जिन्हें नक्सल प्रभावित क्षेत्र में शिक्षा की विभिन्न परियोजनाओं के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जी हां हम बात कर रहे है राज्य के सबसे पिछड़े जिले की जहाँ सबसे ज्यादा गरीबी और साक्षरता प्रतिशत सबसे कम है , आज यहां के गरीब बच्चे आईआईटी, एनआईटी, ऐम्स जैसी संस्थान में पढ़ाई कर राज्य का नाम रोशन कर रहे है।

इसका पूरा श्रेय यहां के कलेक्टर को जाता है जिन्होंने गरीब बच्चो के लिए विभिन्न परियोजनाओं की शुरुआत की।

गांव गांव जाकर बच्चो एवं उनके माता पिता को प्रेरित किया , कई छात्रावास बनवाये, और तकनीकी का प्रयोग कर के सरकारी स्कूलों में वो सब करवाया जो बड़े बड़े प्राइवेट स्कूलों में होता है।

साथ ही रोजगार के लिए कौशल विकाश, कॉल सेंटर जैसे कई योजनाओं की नींव रखी।

आज इस छोटे से जिले ने देश मे नया आयाम लिखा है खुद प्रधानमंत्री ने भी ट्वीट कर इसकी तारीफ की और कहा कि यह जिला देश के बाकी जिलो के लिए एक आदर्श बनेगा

आकाश ने रश्मि को जवाब दिया

कुछ सपने कभी पूरे नही होते रश्मि और जो पूरे हो गए वो सपने कैसे ...

शुभकामनाओ के लिए धन्यवाद ....।

और फोन कट कर दिया

आज सालो बाद आकाश के चेहरे पर ख़ुशी और मन मे सन्तुष्टि थी, जिस दिन वो रश्मि से अलग हुआ था उसी दिन उसने ठान लिया था कि वो कुछ ऐसा करेगा कि कभी कोई आकाश अपनी गरीबी के कारण रश्मि से जुदा न हो , कभी किसी और आकाश का सपना अधूरा न रह जाये।

यही वजह थी कि उसने अपनी ट्रेनिंग के बाद राज्य के सबसे पिछड़े जिले में पोस्टिंग की ईक्षा जताई थी।

आज आकाश के पास सबकुछ है फिर भी कुछ खालीपन सा लगता है, लगता है वक्त की दौड़ में और जिंदगी के सफर में कोई हमसफ़र छूट गया और छोड़ गया एक अधूरा सपना ,

एक अधूरा सपना जिसने जाने कितने सपने पूरे किए पर खुद अधूरा ही रह गया .....।